PART-**1**

प्राचीन भारत के भूगोलवेत्ता- वाराहमिहिर

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल विभाग

SNSRKS महाविद्यालय सहरसा

प्राचीन भारत के भूगोलवेत्ता (Geographers of Ancient India)

विश्व का प्राचीनतम ज्ञान भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है । रामायण और महाभारत काल से लेकर बारहवीं शती ईस्वी तक अनेक भारतीय विद्वानों ने विभिन्न भौगोलिक पक्षों का वर्णन अपने-अपने ग्रंथों में किया है। प्राचीन काल में भूगोल नाम का कोई अलग विषय नहीं था किन्तु धरातलीय तथा आकाशीय पिण्डों से सम्बंधित अध्ययन क्षेत्रशास्त्र के रूप में प्रचलित था। इसीलिए भूगोल और खगोल को एक-दूसरे से सम्बद्ध माना जाता था। गणितीय भूगोल और खगोलीय भूगोल प्राचीन भूगोल के प्रमुख पक्ष थे। इसके साथ ही भौतिक तथा मानवीय तथ्यों के प्रादेशिक वर्णन भी इसके अन्तर्गत समाहित होते थे। प्राचीन भारत के प्रमुख विद्वान निम्नांकित हैं जिन्होंने अपने ग्रंथों में भूगोल के विभिन्न पक्षों की व्याख्या और वर्णन किये हैं।

(3) वाराहमिहिर

वाराहमिहिर चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (शासन काल 375-415 ई०) के समकालीन थे और गुप्तकाल के दूसरे प्रसिद्ध खगोल विज्ञानी थे उन्होंने 'पंचसिद्धानिका' नामक ग्रंथ लिखा जिसमें खगोलिकी की पाँच पद्धतियों की व्याख्या की गयी है। वे पृथ्वी के किसी बिन्दु के अक्षांश ज्ञात करने की विधि से परिचित थे। उन्होंने गणित में दशमलव के प्रयोग और महत्व से भारतीयों को अवगत करा दिया था । 'बृहजातक', 'बृहत्संहिता' और 'लघुजातक' वाराहमिहिर के अन्य प्रमुख ग्रंथ हैं । वाराहमिहिर ने सिद्ध किया था कि चन्द्रमा पृथ्वी का चक्कर लगाता है और पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है। उन्होंने ग्रहों के संचालन तथा अन्य खगोलीय समस्याओं के अध्ययन के लिए अनेक यूनानी कृतियों का भी सहारा लिया था।